मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १०९ मई-२०१६

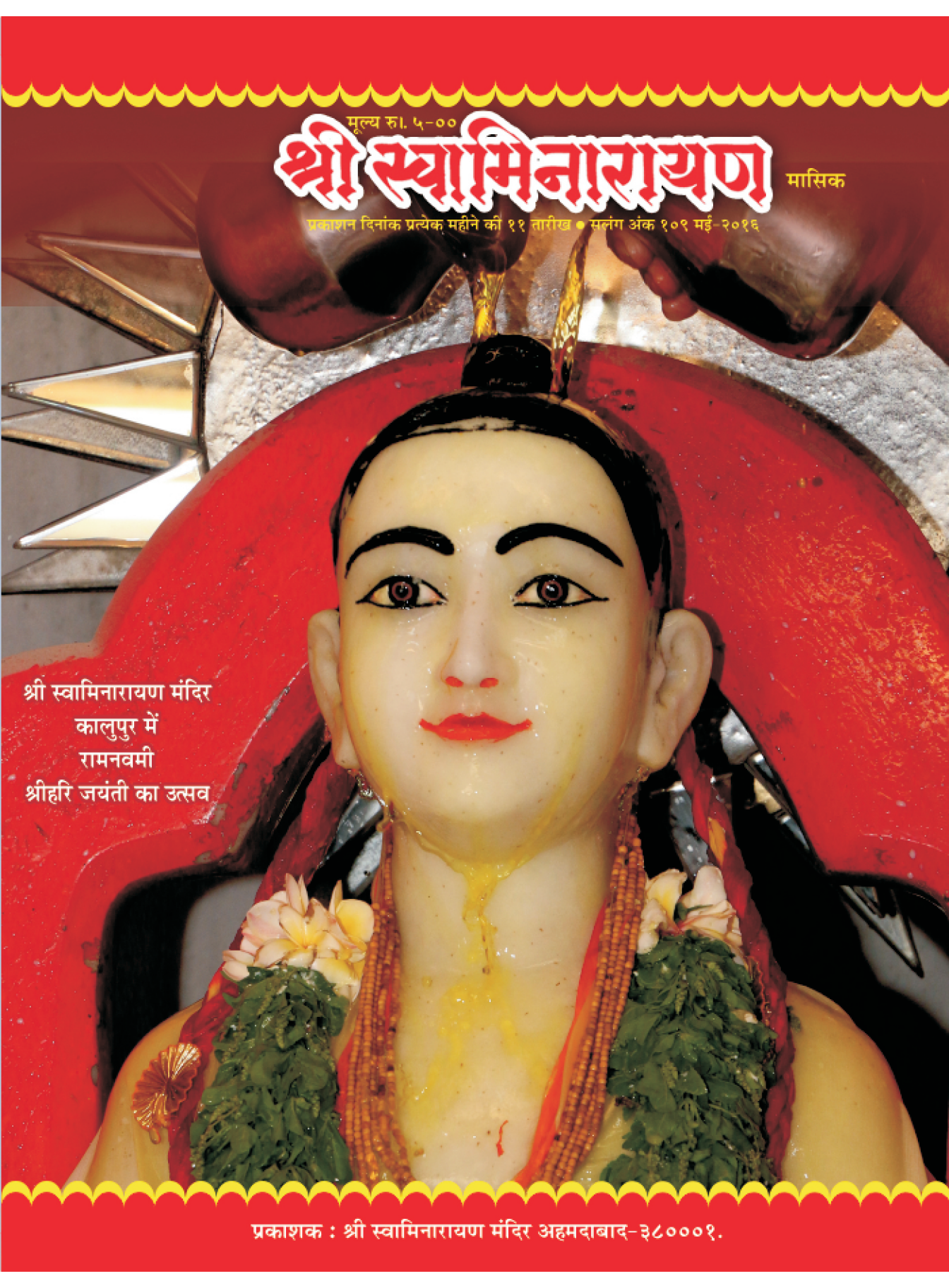

श्री स्वामिनारायण मंदिर
कालुपुर में
रामनवमी
श्रीहरि जयंती का उत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) अपने प.पू. बड़े महाराजश्री के ७३ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ठन्ढे किये गये मगस को केक का रुप देकर उसे काटा गया, अमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा अन्य धामों से आये हुए संतो के साथ मनाया गया । (२) सापावाडा मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर नूतन मंदिरि के स्तंभ का पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) बालासिनोर मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।(४) लूणावाडा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल रजत जयंती प्रसंग पर युवा शिबिर में आशीर्वचन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(५) कांकरिया मंदिर में श्री हनुमान जयंती निमित्त मारुति यज्ञ में आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : १०९

मई-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	चंदनम्	०६
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०६.	सत्संग बालवाटिका	१५
०७.	भक्ति सुधा	१७
०८.	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

अपने भारत में आज पानी की सबसे बड़ी समस्या हो गई है। उस में भी विशेष रुप से महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश के अमुक विस्तार में करीब तीन वर्ष से बहुत कम बरसात हुआ है। अपने गुजरात में भी लगभग सभी डेमों में पानी नहिवत् है। सरदार सरोवर ही आज के समय में सभी को पानी की पूर्णता दे रहा है। जब कि अपने यहाँ पानी व्यर्थ का बहा दिया जाता है। यत्र तत्र नहर में लिकेज, नल में लिकेज, घरों में जो पानी आता है उसमें काफी दुरुपयोग किया जाता है।

जहाँ पर दो-चार गाँव दूर से पानी लाकर पीया जाता है, ऐसे लोगों से पूछा जाय कि पानी कैसे लाया जाता है ? इसलिये पानी का उपयोग ध्यान देकर करना चाहिये। व्यर्थ का पानी गिरा न दिया जाय इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। यदि घरों में नल बिगड़ी हो तो उसकी रिपेरींग करानी चाहिए। आपको आठ दिन तक पानी नहीं मिलेगा इस तरह पानी का बचाव करके उपयोग कीजियेगा।

अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान स्वयं, कूप, तालाब, बावड़ी खोदवाकर सभी को पानी का सदुपयोग करने की बात समझाते। इसलिये प्रिय भक्तों ! आप सभी लोग इस वात का अवश्य ध्यान रखना कि अपने घर, बगीचे, खेत इत्यादि स्थानो पर कहीं भी पानी का दुरुपयोग न हो, इसका ध्यान रखना इस तरह की आप सभी से नम्र प्रार्थना है।

हम सभी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान से प्रार्थना करें कि हे महाराज इस वर्ष समग्र भारत में खूब अच्छा बरसात कीजियेगा जिससे छोटे-छोटे पशु-पक्षी की प्यास बूझे और किसानो को भी खूब आनंद हो।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अप्रैल-२०१६)

६	श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर के शतामृत पाटोत्सव के प्रसंग पर पदार्पण।
७	धाकडी (ता. विरमगाँव) गाँव में कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
१०-११	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) तथा अंजार पदार्पण।
१८	बापूनगर एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण।
१९ से ५ मई	अमेरिका में शिकागो मंदिर कथा पारायण प्रसंग पर तथा बायरन में आई.एस.एस.ओ. कोन्फरन्स तथा नवनिर्मित जेक्शन विले मंदिर के निमित्त धर्म प्रवास।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यो को सूचना

श्री स्वामिनारायण मादिक प्रति मास की ११ तारीख को नियमित पोस्ट किया जाता है। फिर भी किसी सदस्यो को अंक न मिले तो किसी भी महीने की २० तारीख के बाद कार्यालय में मो.नं. ९०९९०९८९६९ फर जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अंक स्टोक में होगा तो अवश्य प्रेषित किया जायेगा। २० तारीख तक प्रतीक्षा करनी होगी।

फूल स्केप नोटबुक का वितरण हो रहा है

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की तरफ से फूल स्केप नोटबुक ता. १-५-१६ से वितरण की जायेगी।

१ दर्जन बडी नोट बुक - रु। २००/-

१ दर्जन छोटी नोट बुक - रु। १३०/-

प्रत्येक युवक मंडल अपने विस्तार के गाँव में वितरण करने के लिये संपर्क करें

मो.: ९८२४०३३१७५, ९६६२०२१८२९

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

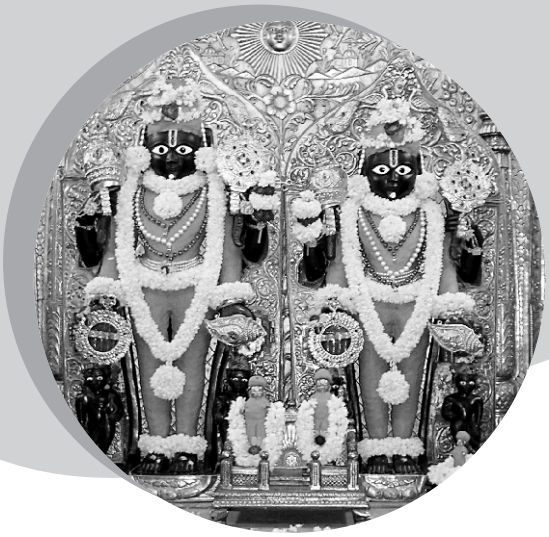

॥ चंदनम् ॥

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अनपी वैदिक तथा लौकिक पूजा विधिमें पूजन तथा अर्चन में चन्दन का उपयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। चंदन का आध्यात्मिक तथा आरोग्य के विषय में काफी महत्व है। इस लिये पूजा विधिमें तिलक चन्दन का विधान किया गया है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में गले में धारण की जाने वाली कंठी, जपमाला, चंदन को उत्तम बताया गया है। शिक्षापत्री श्लोक ४२ में श्रीहरिने पूजाविधिके विषय में लिखा है कि तिलक गोपी चन्दन से करना अथवा भगवान की पूजा करते समय बचे हुये केसर-कुमकुम से युक्त चन्दन से ऊर्ध्वपूंड्र तिलक करना, गोपी चंदन अर्थात् द्वारिका माहात्म्य में प्रसिद्ध गोपी तालाब-जिस में राधा सहित व्रज की गोपियां श्रीकृष्ण भगवान के स्वधाम का समाचार सुनकर अपनी नश्वर देह को विलीन की थी, उस गोपी तालाब की मृत्तिका से तिलक करना। व्यासजीने मदन पारिजात में कहा है कि गोपियों की देह में से बनी जो मृत्तिका-उसे जो धारण करता है वह सभी पापों से मुक्त हो जायेगा। तिलक के बीच में गोल चंदन करना या गोपीचंदन अथवा राधालक्ष्मीजी के प्रसादीका कुम कुम मस्तक पर लगाना।

चंदन तथा वन्दन भगवान को खूब प्रिय है। चंदन लगाकर जो प्रभु को वंदन करता है वह प्रभु को प्रिय होता है। इसलीये पूजा के प्रारंभ में ब्राह्मण लोग यजमान भाले तिलकं कुर्यात् कहकर तिलक-चंदन लगाकर पूजा का अधिकारी बनाते हैं। अपने बैष्णवी पूजा परंपरा में वैशाख शुक्ल-३ से ज्येष्ठ शुक्ल-१५ तक डेढ मास तक ठाकुरजी को चन्दन से चर्चित किया जाता है। चंदन की प्रकृति शीतल है, ठन्ढक देती है। ग्रीष्म ऋतु में ठाकुरजी को चंदन का लेपन करने से अर्चा स्वरुप को शीतलता प्रदान की जाती है। इसके अलांवा चंदन केवल शीतलता के लिये ही नहीं होता, चंदन में लक्ष्मी का वास है, भक्ति तथा शक्ति का प्रतीक है। इसी लिये चंदन का लेप भगवान की मूर्तियों को ही किया जाता है। राधाजी, लक्ष्मीजी, सीताजी, या भक्ति माता को इसका लेप नहीं किया जाता। इसका कारण यह भी है कि बदरीनाथ, केदारनाथ, मुक्तिनाथ जैसे माईनस डिग्री ताप मानवाले वातावरण में रहने वाले भगवान को वहाँ भी चन्दन चर्चित किया जाता है। भगवान को भोग में चनद-तुलसी का अर्पण करके भक्तों प्रसाद के रुप में दिया जाता है। देवी के किसी की भी मंदिर में चन्दन से नहीं अपितु कुकुम से पूजा की जाती है। इसका कारण यह है कि चंदन स्वयं देवी स्वरुपा है। कदाचित किसी को भक्ति देवी की अर्चा करने की मनोकाना हो तो चंदन में कुमकुम मिश्रित करके किया जा सकता है। वैशाख मास को माधव

मास के नाम से शास्त्रों में कहा गया है। इसलिये इस मास में भगवान को चंदन से लेपन किया जाय तो भगवान की अधिक प्रसन्नता होती है। चंदन का जो लेपन करता है इसकी सभी मनोकामना पूर्ण हो जाती है। जो व्यक्ति चंदन घिसरक भगवान को चंदन से चर्चित करता है उसके ऊपर लक्ष्मी की कृपा होती है। हरिद्रता हट जाती है। चन्दन चर्चित प्रभु का अवश्य दर्शन करें। पूजाविधिमें पौराणिक मंत्र है।''श्री खडंचन्दनं दिव्यम् - ।''

इसका अर्थ यह है कि श्री अर्थात् लक्ष्मीजी के अंशरुप दिव्य चंदन से हे प्रभु मैं आप की पूजा करता हूँ, उसे आप स्वीकार करें।

विष्णु स्वरुप शालिग्राम की पूजा में अति आवश्यक सामग्री चंदन तथा तुलसी दल है। तुलसीदल वृंदा स्वरुप तथा चंदन राधालक्ष्मीस्वुपा है। तुलसीदल के अभाव में प्रतिकूल संयोग में यदि तुलसी दल न मिले या निषिद्धदिनों में, प्रतिकूल देशकाल में तुसीदल को तोड़ा न जा सके तो मात्र चंदन से ही पूजा को पूर्ण करनी चाहिये। चंदन अर्पण करने के बाद तुलसी दल को उल्टा चढायें। रात्रि में शयन के समय तुलसी दल को उतार लें। भगवान की मूर्तियो को तुलसीदल चरण में तथा चंदन भाल में चढाने का विधान है।

महादेव से लेकर भगवान के सभी स्वरुपों को चंदन अर्चन करने का विधान है। पुष्पों तथा अन्य द्रव्यों में भिन्नता है। परंतु चंदन सर्व मान्य द्रव्य के रुप में स्वीकार किया गया है।

दक्षिण भारत के राज्यों में चंदन का जंगल है। जिस चंदन के घिसने से चंदन का लेप तैयार होता है। चंदन का वृक्ष अपने देश की विशेषता है। वर्तमान में चंदन वृक्ष काटने पर प्रतिबंधहै, इसलिये उसकी कींमत बढ गई है। इसलिये बनावटी चंदन बाजार में बिकने लगा है। इस चंदन का मौज शौख के पदार्थो में उपयोग होने से मिलावट की अधिकता हो गई है।

परंतु जो मिले उसे लक्ष्मी जी का अंश मानकर पूजा कर लेनी चाहिए। चंदन से पूजा करने वाला भक्त राधा-लक्ष्मी की तरह भगवान को प्रिय होता है। मंदिर में चन्दन से भगवान को अनुलिप्त करना चाहिए। गरमी की मात्रा अधिक होने से वैशाख महीने में विशेष रुप से चन्दन का लेप करना चाहिए। यह पूजा विधिमें महत्व का अंग है। हरिभक्त इस सेवा को अवश्य करें। भगवान को चंदन मिश्रित जल से महाभिषेक किया जाता है। केसर मिश्रित तथा चंदन मिश्रित जल से अलग-अलग स्नान कराना चाहिये।

भागवतजी में मंगलाष्टक में आता है - ''सर्वांगे हरिचंदनं सुललितम्'' भगवान के सर्वागं में सुंदर चंदन का अनुलेप किया हुआ है। आरोग्य की दृष्टि से चंदन का गुण उष्णता शोषक है। शरीरमें जहरीले तत्व को शोख लेता है, प्राकृतिक गुणों का भंडार है। प्राकृतिक चिकित्सक शरीर पर माटी या चंदन का लेप लगाकर बड़े हठीले रोग को ठीक करते हैं। चैत्र मास में भगवान की शरीर में उष्णता का प्रवेश होता है उस उष्णता को वैशाख मास में चंदन का लेप करने से दूर किया जाता है, गरमी की विकृति को दूर करना इस चंदन का रहस्य है।

जैन धर्म के अनुयायी चंदन का छोटा तिलक करते हैं। इसी तरह सैव परंपरा में चंदन का त्रिपुंड्र किया जाता है।

चंदन का तिलक करने वाले के घर में धन-वैभव सदा भरा रहता है। इसके अलांवा पाप एवं त्रिविधताप का नाश होता है। और ग्रहो से शांति मिलती है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

श्री घनश्याम महोत्सव प्रसंग पर - नारायणघाट मंदिर, अमदावाद ता. २६-२-१६ : हम भाग्यशाली है कि प्रसादी की इस भूमि पर बैठकर कथा का तथा महोत्सव का दिव्य सुख ले रहे हैं। अपने पास एक निश्चित इतिहास है कोई किंवदन्ती नहीं है। श्रीजी महाराज - श्री नरनारायणदेव की संपूर्ण कृपा तथा देव स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी इत्यादि संत अन्य संतो को साथ रखकर खूब परिश्रम करते हैं तथा सत्संग में जिन्हें अपना माना गया है ऐसे हरिभक्त तन-मन-धन की सेवा से ऐसे महोत्सव सफल होते रहते हैं। यह एक टीम वर्क है। ये देव हमारे हैं। मंदिर हमारा है। ये संत अपने हैं। ऐसा मानकर हरिभक्त सेवा करते हैं। उत्सव महाराज को प्रिय है, यही महाराज की आज्ञा भी है। कारण यह कि - सत्संग की भीड़ में रहने से अपनी कमी दूर होती है। इसके अलांवा स्नेह - एकता तथा आत्मबुद्धि में वृद्धि होती है। उत्सव तथा कथा के माध्यम से बहुत सारे जीवात्मा का मिलन होता - सम्बन्धहोता है । सत्य भी यही है कि किसी जीवात्मा को भगवान की पहचान कराने से अधिक कोई पुण्य नहीं है। भगवान तक पहुंचना ही मनुष्य जन्म का हेतु है। पैसे का हमारा कोई विरोधनहीं है। कारण कि यहाँ जो लाईट की व्यवस्था की गई है वह पैसे के विना संभव नहीं है । परंतु इन साधनो को प्राप्य करके अपने लक्ष्य को भुलाना नहीं चैहिये। दंडवत्, प्रदक्षिणा, कथा में सभी साधन हैं। परंतु इन साधनो के पीछे यदि कोई साध्य हो तो एकमात्र भगवान हैं । भगवान तक पहुंचना बड़ा कठिन था परंतु महाराजने हम सभी के ऊपर अतिकृपा करके सरल बना दिया।

महाराजने स्वयं बड़े बड़े मंदिरो का निर्माण करवाया, उसमें अपने ही स्वरुप को प्रतिष्ठित किया। इसके बाद समय बीतते बहुत सारे मंदिर बने। मंदिर छोटा हो या बड़ा धातु पाषाण की मूर्ति हो या चित्र प्रतिमा परंतु अपने लिये वह धातु-पाषाण-चित्र की मूर्ति नहीं होती। उसमें साक्षात् भगवान मूर्ति के रुप में विराजमान होते हैं । (धर्मवंशी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की सनातन परंपरा द्वारा प्रतिष्ठित श्रीहरि के स्वरुप श्रीहरि के वचन से हम सभी के लिये प्रगट प्रत्यक्ष हैं) अपने घर में कोई मेहमान आया हो तो उसके स्वागत में कोई कमी नहीं रखते। तो अपने मंदिरों में हमें मूर्ति में प्रगट भाव दिखाई देता हो तो हमें उसमूर्ति के प्रति कैसी मर्यादा रखनी चाहिये। इसका सदा विचार करना चाहिए। एक गुलाब का फूल कोई ब्रह्मचारी को देता है वह फूल भगवान तक पहुंचता है या नहीं। अन्यत्र भगवान को प्राप्त करने के लिये कितनी मेहनत करनी पड़ती है । कितनी तीर्थयात्रा करनी पडती है फिर भी भगवान के स्वरुप की पहचान नहीं होती।

जब भगवान प्रसन्न होते हैं तो हम सभी के ऊपर

पैसे की बरसात या पुष्पवृष्टि नहीं करते परंतु सद्‌बुद्धि देते हैं। जिससे अच्छे विचार आते हैं। मंदिर में - सत्संग में जाने का विचार होता है। सत्संग में अपनापन लगता है। संत-भक्त सभी आपस में गुणबुद्धि रखते हैं। दुनिया की चिंता हमे नहीं करनी है। इस स्थान पर जो एकता है वह सदा रहनी चाहिए। पझल्स की एक क्रीडा का दृष्टांत हम इस से पूर्व दिये हैं। परंतु इस समय याद आ गया है इस - लिये पुनः कह रहे हैं। अब यह पझल्स की क्रीडा दिखाई नहीं देती। मोबाईल आ गया। परंतु पहले की वात है।

एक पिता अपनी छोटी बेटी से कहा कि इस पझल्स में जो छोटे छोटे-इधर-उधर, उल्टा-पल्टा है उसे तूं इस तरह व्यवस्थित कर दें कि एक दुनिया के नक्शाकी आकृति वन जाय।

आगे भी यह कुशलता तेरे काम में आयेगी। बेटी खूब मेहनत की, लेकिन सफलता नहीं मिली, रात्रि हो गई। माता-पिता भी निद्राधीन हो गये। लेकिन बेटी थकी नहीं। रात्रि में थोडा समय बीतने पर अचानक आकृति बन गई। पुत्री इतना आनंद में आ गई कि माता-पिता को जागकर कहती है कि मुझसे यह आकृति बन गई। पिता ने कहा कि दिन में यह आकृति नहीं बनी रात्रि में एकाएक कैसे बन गई। कैसे यह सफलता मिली ? पुत्री ने कहा इस पझल्स में एक फेमिली मेम्बर जो इधर-उधर, उल्टा-पुल्टा पड़ा था उसे व्यवस्थित कर दी बाद में तो वाकी दुनिया के नक्शा की आकृति भी अपने आप बन गई। इस दृष्टांत का भाव यह है कि हम लोग भी एक परिवार की तरह एकसाथ में रहेंगे और श्रीजी महाराज ने जो श्री नरनारायणदेवादिक देव को दिया है उन्हें केन्द्र में रखेंगे तो अनपी उन्नति इससे भी अधिक होती रहेगी। महाराज सत्संग में जब आाये तब प्रथमवार रामानंद स्वामी ने महाराज को खंभे से लिपट कर रखने को कहा था। वह क्या फिजिकल खंभे से लिपटने को कहा था ? नहीं, यह सत्संग का जो अंग है उसे अपनी बांहो में भरकर रखना है।

प्रत्येक प्रसंग के पीछे खूब परिश्रम की आवश्यकता होती है। इसके लिए बेक ग्राउन्ड देखना चाहिये। ब्रेक ग्राउन्ड में संत तथा हम दोनो एक ही लक्ष्य रखते हैं कि अनंतजीव भगवान की पहचान कर सके। मंदिरो के माध्यम से भजन भक्ति हो, संस्कार का सिंचन हो, अपने बड़े-बूढे खूब परिश्रम करके सत्संग की रक्षा किये है, इसीसे हम सुखी हैं। इस परंपरा को आने वाली पीढी को हम सुरक्षित दें। गृहस्थों को पचास, १००, १०० रुपये कमाने के लिये अथक परिश्रम करना पडता है। उस रुपये को आप सन्मार्ग में खर्च करते हैं। इसका हमें आनंद है। आपके ने पैसे कल पुनः आप सभी में वापस पहुंचजाता है। अभी करीब ८-१० महीने में चार गांवो में हरि मंदिर में प्रतिष्ठा की। आप सभी के ऊपर हम तो प्रसन्न है ही परंतु गाँवो में मंदिर बने या मंदिर का जीर्णोद्धार हो इसमें भी हम प्रसन्न होते हैं। गाँवो में मंदिर के लिये कितनी जमीन चाहिये। ४० x ६० फुट के होल में टाइल्स लगवा दीजिए, एक पंखा लगा दीजिए उस गाँव के लोगों को भजन भक्ति की सुगमता हो जाय। बालकों में संस्कार आवे। अभी एक गाँव में गये उस समय प्रथम ३-४ भक्त ही मंदिर में दर्शन करने आते थे। संतो ने भगवान की महिमा समझाई, वहीं उसके, सत्संग करवाये जिसके परिणाम स्वरुप इस समय संध्या आरती के समय करीब १५० जितने भक्त आते हैं। कईबार हम तथा संत स्टेज के ऊपर ७-८ की संख्या में होते हैं और नीचे सुनने वाले हमसे भी कम होते हैं फिर भी हम वहाँ से उठकर चले नहीं जाते। कारण यह कि हम जो भी करते हैं वह श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता के लिये करते हैं। टोला इकटठा करना आवश्यक नहीं है, परंतु जो आत्म समर्पित भाव से भगवान की शरण में आते हैं उन्हें सत्संग से तथा भगवान के सुख से वंचित नहीं रहने देता है। हमें सत्संग का व्याप बढाना है। भीड के साथ हमारा कोई मतलब नहीं।

सत्संग में अपनी बहुत सारी बेटियां भी है जो

मायके मे २०-२५ वर्ष तक सत्संग का सुख ली श्वसुरपक्ष में सत्संग न हो तथा गाँवो में अपना मंदिर न हो तो महाराज का अभाव बना रहेगा। इसके बाद ऐसे गाँवो में सत्संगी बहने जांय, बाद में संत जांय, हम जायें वहाँ जाकर सभा की जाय तो निश्चित ही वहाँ भी सत्संग का विस्तार होगा गाँवो में रामजी का मंदिर हो, माताजी का मंदिर हो, यहाँ भी सभा की जा सकती है। ऐसे बहुत जगहों पर अपने मंदिर बने है। कितने युवान विदेशो में खूब दूर-दूर तक रहते हैं। उनके माता पिता यहाँ रहते हैं, फिर भी जब हम विदेश की धरती पर जाते हैं उस समय उन युवानो से मिलते हैं तो ख्याल आता है कि यहाँ की अपेक्षा वहाँ के युवान अच्छा सत्संग करते हैं। यह देखकर खूब आनंद होता है।

आप सभी लोग खूब सेवा किये है, यहाँ परदे के पीछे से बहुत से संत-हरिभक्त सेवा करते हैं। उस समय सब कुछ तैयार मिल गया हो ऐसा लगता है। ऐसा सभी ज्ञात-अज्ञात हरिभक्तों का परिवार खूब सुखी हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

(प.पू. महाराजश्री की तबियत खराब होते हुये भी शुभाशीर्वाद दिये थे।)

प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २८-२-१६ नारायणघाट का यह भव्य दिव्य उत्सव देखकर खूब आनंद हुआ। इस उत्सव की सफलता का यदि कोई रहस्य हो तो वह है श्री नरनारायणदेव की कृपा । श्री नरनारायणदेव के आचार्य, संत या हरिभक्तों की एक विलक्षणता होती है वह है श्री नरनारायणदेव के प्रति एक निष्ठा । इसी लीये सभी उत्सव श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में मनाये जाते है। जहाँ पर श्री नरनारायणदेव केन्द्र स्थान में हों तो वही पर वे सहभागी होते हैं । श्री नरनारायणदेव से अलग होकर जो उत्सव करता है उसका उत्सव उसी तरह देव अस्वीकार करते हैं जैसे समुद्र लाश को बाहर फेकं देता है। ऐसे उत्सव करने से पूर्व अमदावाद तथा जेतलपुर के वचनामृत का वांचन करेंगे तभी श्री नरनारायणदेव की महिमा समझ में आयेगी और उत्सव करना सार्थक होगा।

गढपुर में दादा खाचर एकबार निराश हो गये, मुख पर ग्लानि हो रही थी महाराजने पूछा कि, दादा ? क्या हुआ आप क्यों निराश है ? दादाने कहा, महाराज ? आप अभी हम सभी के बीच प्रत्यक्ष बिराजमान है। हमारी कितनी देखभाल करते हैं। जब आप नहीं रहेगे तब हम सभी की कौन देख भाल करेगा ? यह सुनकर महाराजने कहा कि, दादा ? दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। आज जितनी देखरेख हम रखते हैं उससे भी अधिक जब इस धरती पर हम नहीं रहेंगे तब देख भाल करेंगे । महाराज का यह शब्द आज भी हम सभी अनुभव करते हैं। आज भी दिव्यरुप से हम सभी के बीच रह कर हम सभी की देखभाल कर रहे हैं । अमदावाद की शोभा तथा शहर की शोभा इस रिवर फ्रन्ट से बढी है। परंतु रिवल फ्रन्ट की शोभा अपने इस नारायणघाट मंदिर से बढी है।

स्कूल का एक प्रसंग याद आता है ? एक विद्यार्थी के ऊपर शिक्षक इतना प्रसन्न था कि परीक्षा से पहेले ही उसे प्रश्नपत्र दे देता था। ट्युशन कराता, परीक्षा में चोरी कराता फिर भी जब परिणाम आया तो ० शून्य मार्क आया। शिक्षक के पूछने पर बताया कि मैंने कुछ लिखा ही नही, पेपर कोरा ही छोड़के आ गया हूँ। यह प्रसंग इस लिये सुना रहा हूँ कि - श्रीजी महाराजने हम सभी के लिये सत्संग में कुछ भी बाकी नहीं रखा - देव-आचार्य-संत-शास्त्र इत्यादि को देकर बड़ा उपकार किया है। जो कुछ महाराज को कहना था वह सब कुछ हम सभी के काम में कह दिया है। बोला हुआ सुने तो सुनने में कभी फर्क पड़ सकता है, लिखा हुआ वांचने मे कदाचित फर्क पड़ सकता है, परंतु कोई अपने काम में कुछ कहे तो वह वात भुलाती नहीं है। इसलिये यदि हम अपने पेपर को कोरा छोड़ दे तो यह हमारी भूल है। इस लिये गांठ बांधकर इस जन्म को अन्तिम मानकर भजन-भक्ति-सत्संग कर लेना चाहिये, अन्यथा श्री नरनारायणदेव के इस परिसर में से स्वतः बहिष्कृत हो

जायेगे।

श्री नरनारायणदेव के १९४ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ता. ११-३-१६ : हम बडे भाग्यशाली है कि जो इस प्रसादी की सभा मंडप में बैठे हुए है। इसी सभा मंडप में ५०० परमहंस महाराज का पूजन किये थे । स्वयं महाराज इस भूमि पर दिव्य लीला किये हैं। हम फ्लाईट में बुकिंग कराकर अमदावाद में रात्रि को पौने बारह बजे पहुंचे। इस भूमि के रज का कितना महत्व है। आज भी कितने हरिभक्त मंदिर का प्रांगण सुबह में आकर बटोरते हैं। मंदिर की रज घर ले जाने है। प्रातः तीन बजे वे लोग उठते होंगे। सतयुग में जाते की जरुरत ही नहीं। वर्तमान काल में सभी के सतगुण को लें तो सत्ययुग हो जायेगा। हम जो देखते है उससे अधिक संत लोग तथा भक्त गण भजन भक्ति करते हैं । प्रत्येक उत्सव में श्री नरनारायणदेव के दर्शन में खूब भीड़ होती है । परंतु सत्संग के भीड में ही आनंद है। ऋषि-मुनियों की बात हम करते हैं, परंतु भूतकाल में जाने की जरुरत ही नहीं वर्तमान काल में ही अपने संत २२ वर्ष की उम्र में संत तथा देव के लिये कितना कार्य करते हैं, कितने लोगों को सत्संग के मार्ग पर ले जाते है। सच्चा त्यागी वैरागी तो वह है जो देव के लिये कार्य करे। देव का होकर रहे। धर्मवंशी आचार्य की आज्ञा में रहे। देव का कार्य न करे और बड़ी बड़ी इमारतों का निर्माण करे उससे क्या फायदा। सब तो मायिक प्रपंच है।

धर्मादा की अभी बात हुई - आप जिस देश में रहते हैं इस देश के देव को धर्मादा दीजिये - चाहे श्री नरनारायणदेव देश में हो या श्री लक्ष्मीनारायण देव देश में हो वहाँ की पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करें । यत्र तत्र धर्मादा करना श्रीहरि के सिद्धान्तो का खंडन है, साम्प्रदायिक सिद्धान्त का अवमूल्यन है। इससे महाराज नाराज ही नहीं होगे बल्कि आप का पैसा आपका श्रम व्यर्थ जायेगा । जिस तरह सरकार का टेक्स भरना अनीवार्य होता है उसी तरह देव का भी धर्मादा निकालना अनिवार्य है। भगवान ने जिन्हे जो पात्र दिया है, उश पात्र का योग्य न्याय होना चाहिए। इस तरह की गरिमा रखने में सुख है। हम स्थाई नहीं है, भगवान स्थाई है। भगवान ने हमे श्री नरनारायणदेव को दिया है जो स्थाई है। इन्हीं के साथ जुडे रहना है। इन्हीं का दृढता से आश्रय रखना है। अपनी संतान को भी यही शिक्षा दीजिये।

हम एकवार ग.प्र.प. का चौथा वचनामृत वांच रहे थे। महाराजने कहा कि ''भगवान के भक्त को परस्पर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए ।'' यह सुनकर आनंदानंद स्वामीने कहा कि हे महाराज ! ईर्ष्या तो रहती है। हमे उस वचनामृत को वांचने में रुचि हो गई। ऐसा नहीं लगता कि आनंदानंद स्वामी बहुत मर्द कहे जांय ? अति निष्कपट कहे जायेंगे। भरी सभा में उन्होंने ईर्ष्या रहने की बात की । लेकिन ईर्ष्या कैसी करनी चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति में जो गुण हो उस गुण की प्राप्ति की ईर्ष्या करनी चाहिए। अपने अवगुण का त्याग करना। भक्त का द्रोह न हो ऐसी ईर्ष्या करनी चाहिए।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम पंचम वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर ता. ११-३-१६ : म्युजियम का उत्सव किस तरह करना इस विरर्श पर मैने संतो से कहा कि अपना यह सत्संग परिवार इस निमित्त से एकत्रित हो और सब साथ मिलकर भोजन का प्रसाद लें, आनंद करें । इसके अलांवा आप सभी को म्युजियम की महिमा है, भाव है इस लिये दूर-दूर से आये हैं। आप लोग इससे अच्छा घर में भोजन बनाकर खा सकते हैं इतना महाराजने सभी को सुखी किया है।

अपना मंदिर हो या म्युजियम हो उसमें भक्तों का भाव, भक्ति तथा समर्पण मिला हुआ है जिसकी महक सदा अनुभूत होती है। इसी लिये महाराज अनपे मंदिरो में तथा म्युजियम में मूर्ति के रुप में तथा प्रसादी की वस्तु के रुप में प्रत्यक्ष अनुभव का आनंद देते हैं। इसके साथ ही भक्तों की सेवा का स्मरण करते ही मंदिर में या म्युजियम में प्रवेश करते ही दीव्यता का अनुभव होने लगता है । अमदावाद मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के सामने स्तंभ को जिसे चांदी से मढा गया है उसका

इतिहास हम सभी जानते हैं । ऐसे समर्पित भक्त कहाँ मिलेगें । परोक्ष के मंदिर पैसे के प्राधान्य ता से बनते हैं, केवल पैसों से कदाच बड़ा मंदिर बनाया जा सकता है, बड़ी मूर्ति भी पधराई जा सकती है, परंन्तु इससे दीव्यता नहीं लाई जा सकती ।

अपने मंदिरो के प्रसाद में लड्डू की वात करें तो कितने लोग इसके स्वाद का रहस्य संशोधन करने के लिये आये लेकिन उन्हें अन्य मंदिरो में स्वाद नहीं मिला । प्रसाद बनाने के लिये कितने स्थानो पर मसीन का भी प्रयोग किया गया, लेकिन संयोग नहीं बन सका । हम उनलोगों से कहे कि हमारे यहाँ तो प्रसाद के ऊपर श्री नरनारायणदेव की दिव्य दृष्टि रहती है । इसी लिये हमारे प्रसाद का स्वाद भी सर्वोपरि रहता है । टाईम अधिक हो गया है । भोजनालय आप सभी की प्रतिक्षा कर रहा है हम भोजनालय देखने गये थे । बहतु अच्छा बना है । देखना पडेगा न ? हम भी प्रसाद लिये हैं । आप सभी प्रसाद लेकर जाइयेगा ।

पू. बापुजी को म्युजियम खूब प्रिय है । दासभाई हों, करशनभाई हों, या छोटे-बड़े टीम का कोई भी आदमी हो सभी लोग म्युजियम अपना मानकर देख भाल करते हैं । सभी लोग धन्यवाद के पात्र है । सभी को हमारा शुभाशीर्वाद ।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देते हुये कहे कि - म्युजियम के लिये लोग हमें यश देते हैं । परंतु म्युजियम का स्वप्न साकार होने पर छोटे-बड़े सभी संत-हरिभक्त का योगदान है । सब से बड़ा कारण है तो श्री नरनारायणदेव की कृपा है । कई लोग ऐसा भी कहते हैं कि म्युजियम में जो भी प्रसादी की वस्तुयें है वे सभी मांगने नहीं गये थे । सभी को यह पता है कि म्युजियम में जो भी प्रसादी की वस्तुयें है उस में ९०% प्रसादी की वस्तुयें मेरे पास जो परंपरा में मिली थी उसे दर्शनार्थ रखी गयी है । इसके यशपात्र हमारे पिताजी पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री है, जिन्होंने प्रत्येक वस्तुओं की पहचान कराकर रख रखाव के साथ दी थी । उन वस्तुओं को म्युजियम में रखते समय पी.पी. स्वामी तथा शा. निर्गुणदासजी स्वामीको बताकर कि यह वस्तु ऐसी है, यह वस्तु ऐसी है । इस म्युजियम में जो सोलार सिस्टम तथा **Preservation Plus** का लाभ हम ले रहे है उसका विचार तथा व्यवस्था किस तरह करनी चाहिए यह सब विद्यमान आचार्य महाराजश्री के निर्देश में हुआ है । इसका यश उन्हें जाता है ।

दूसरी बात यह कि ''वचनामृत में श्री नरनारयणदेव'' नाम की जो मैने पुस्तिका लिखी है उस पुस्तका को करीब सभी लोग वांचते हैं । परंतु जो नहीं वांचे हो वे लोग वांचकर अवश्य मनन करेंगे । उमसें भी ग.प्र.प्र. का ४८ वाँ वचनामृत जिस में महाराजने ''हरिभक्त मात्र को आज्ञा की है कि श्री नरनाराणदेव को पूजा में रखना । इसमें कोई देश विभाग का नियम लागू नही पड़ता । जेतलपुर का तीसरा वचनामृत - दुष्ट वासना दूर करने की एक मात्र यही उपाय है । हम वचनामृत २७३ की वात करते है और वारंवार यह कहते आये है कि (महाराज के शब्दोमें) हमारे में तथा श्री नरनाराणदेव में रत्ती भर भी अन्तर नही है । हमारी दृष्टि में सबसे बडा भाग्यशाली वह है कि जो सत्संग में भले कई वर्ष न हुये हो, परंतु यह मानता हो कि श्रीजी महाराज तथा श्री नरनारयणदेव एक ही है । इसके अलावां सबसे दुर्भाग्यशाली वह हे जो सत्संग में वर्षो से रहकर सत्संगी होकर श्रीजी महाराज तथा श्रीनरनारायणदेव में फर्क मानता है वह अनुतीर्ण कहा जायेगा ।

म्युजियम के उद्घाटन में अवसर पर तत्कालीन मुख्यमंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदी आये थे । वे जब होल नं. ८ में प्रवेश किये तब हमें खड़ा करके कहे कि इस होल में मुझे कुछ दिव्य अनुभूति हो रही है । इस लिये इस होल का नाम ''मौन मंदिर'' रखियेगा । एक राजकारणी को यदि इस तरह की दिव्य अनुभूति होती हो तो अपने लिये इससे भी सरल है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

ग्रीष्मऋतु में इस गर्मी के अवसर पर गर्मी सभी को त्राहिमाम बुला दी है। परंतु अपने म्युजियम में आनेवाले सभी को शीतलता का अनुभव होता है। म्युजियम परिसर ए.सी. है इस लिये, परंतु उसके भीतर विद्यमान जो भी वस्तु है वह श्रीजी महाराज के पावन स्पर्श से दिव्य हो गई है, उसके दर्शन मात्र से शीलता का अनुभव होता है। इस समय अवकास काल चल रहा है। इस लिये खूब भीड़ रहती है। म्युजियम में वत्तकों का परिवार भी खूब बढ गया है। वे जब पूरे परिवार के साथ घूमने निकलती है, उस समय म्युजियम का वातावरण जीवंत लगने लगता है। म्युजियम के बगीचे में रंगबेरंगी पुष्पों के साथ शुभत्व, शीतलता तथा बापजीकी प्रसन्नता यहाँ फैली रहती है। अपने में उसे समझने, सोचने की क्षमता हो तो .....

नाची उठी सुगंधने झूमी उठ्य पवन
तमने निहारी फूलनां रंगो हंसी पड्य.....
शेटवादय आबूवाला

अभी ता. २५-४-१६ को श्री म्युजियम के स्वप्न द्रष्टा प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वां प्रागट्योत्सव म्युजियम के प्रागंण में बापूजी की इच्छानुसार बड़ी सादगी के साथ मनाया गया। प.पू. बड़े महाराजश्री श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर ८-४५ बजे म्युजियम में पधारे तथा आठ नंबर के हाल में भी श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर भक्तों को दर्शन का लाभ दिये। इसके बाद अनेक धामों से आये हुए संत-हरिभक्तों का निरंतर प्रवाह शुभेच्छा देने के लिये चलता रहा। प.पू. बड़े महाराजश्री नये प्रयोग के रुप में केक के बदले में संप्रदाय की पहचान ऐसे ठन्ढे किये हुए मगस को काटकर सभी को प्रसाद के रुप में दिये थे। इसके बाद संत-हरिभक्त का लगातार प्रवाह क्लासिकल लाइव संगीत के बीच चालू ही रहा। बापूजी की बैठक व्यवस्था बाहर वृक्षों के झुरमुट के बीच की गई है। इस स्थान को जूही के फूलो से अलंकृत किया गया था। इससे बापूजी का पवित्र सानिध्य तथा जूही की सुगंधके समन्वय होने से अपने आप सभी को शीतलता का अनुभव होता था। यहाँ उपस्थित होने वाले सभी को बापूजी के प्रफुल्लित मुख के दर्शन के बाद जो आनन्द की अनुभूति हुई उससे निश्चित ही जीवन में सुख-शांति तथा दीर्घायु का लाभ हुआ होगा। इसी लिये तो अमदावाद की गर्मी का विना विचार किये सभी म्युजियम में रुके रहे।

- प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अप्रैल-२०१६

रु.१६,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया धाम पारसीपनी प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्यदिन के निमित्त समस्त सत्संगी हरिभक्त।
रु.११,०००/-	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, वाली (राज.) के हरिभक्त (मुंबईवाले)
रु.८,७००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर (हवेली) फूल मंडली की बहनों की तरफ से म्युजियम में अनभिषेक के निमित्त प.पू. गादीवालाजी की चरण भेटं अर्पण।
रु.६,१००/-	श्री पंकजकुमार कालीदास पटेल राणीप।
रु.६,०००/-	लवजीभाई प्रेमजीभाई सोलंकी ठक्करनगर।
रु.५,१०१/-	श्री भरतभाई धनजीभाई परमार बारडोली
रु.५,००१/-	ध्रुवकुमार राजेशभाई पटेल प.पू. बड़ेम हाराजश्री के प्रागट्य दिन के निमित्ते।
रु.५,०००/-	श्री लाभुभाई शीवलाल पटेल - कल्याणपुरा
रु.५,०००/-	श्री धीरजभाई लाभुभाई पटेल - कल्याणपुरा
रु.५,०००/-	मीनबहन के. जोषी - बोपल
रु.५,०००/-	विजयाबहन आर. पटेल थलतेज

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अप्रैल-२०१६)

ता. १०-०४-२०१६	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर (हवेली) फूल मंडल की बहनें कृते सां.यो. मंजुबा - भारतीबा
ता. १०-०४-२०१६	(सायं) श्री किरणभाई आर. ब्रह्मभट्ट (खंभातवाला) वडोदरा
ता. १३-०४-२०१६	श्री जगदीशभाई केशवलाल पटेल (राजपुरावाला) राणीप
ता. २४-०४-२०१६	श्री पंकजकुमार कालीदास पटेल (डांगरवावाला) राणीप
ता. २५-०४-२०१६	(प्रातः) श्री सोमाभाई त्रिभोवनदास पटेल परिवार (मोखासणवाला) यु.एस.ए. कृते हेत मितेषकुमार तथा सकरीबहन।
ता. २५-०४-२०१६	श्री उपेनभाई हरिकृष्णभाई शाह (विद्यानगरवाला) यु.एस.ए. राजुल जय शाह जेतस शाह, प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्यदिन के निमित्त।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यानिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कडवा फू ट मीठा हुआ

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

मित्रो ! यह वात विचारो तो गजब की है । जैसे मरचा-गन्ना दोनो एक ही साथ, एक ही जगह पर लगाया जाय तो भी दोनों में भेद रहता है, एक मीठा तथा एक तीखा । दोनो समान जमीन में, समान पानी से सीचे जाने पर भी रुप, रंग, आकार सब कुछ अलग होता है । अलग-अलग स्वाद किसने डाला होगा ? भगवान ही मीठा और कडवा बना सकते । भगवान जो चाहें वही हो सकता है । ऐसा ही एक प्रसंग स्वामिनारायण भगवान की जन्म भूमि छपैया में हुआ । उस समय घनश्याम महाराज बहुत छोटे थे ।

वात ऐसी है कि छपैया में मीन सरोवर के पास घनश्याम महाराज के मामा वशराम की खेती थी । वहीं पर खेती भी करते और रहते भी थे । इसबार उन्होंने खेत में ककड़ी लगाई । जब ककडी लगाये तब उनके मन में था कि ककडी में से जब अच्छा फूट होगा तो घनश्याम को प्रेम से खिलायेंगे । संयोगवश कंकडी की लता अच्छी हुई और उसमें पक कर फूट भी अच्छे तैयार हुये ।

एक दिन मामा ककडी के फूट को खीचे तो कडवी लगी, पुनः दूसरी तीसरी इस तरह चारो कोने के पके फूट को चीखे तो कडवी लगी, अब वे दुःखी होकर घर आगये । उस समय घनश्याम महाराज मामा के घर ही थे । मामा को चिंतित देखकर महाराजने पूछा, मामा ! क्यों बहुत चिंतित दिखाई दे रहे हैं । मामाने घनश्याम महाराज को सभी बात बता दी । यह भी बताया कि अच्छा कंकडी का फूट तैयार होगा तो घनश्याम को खिलायेंगे । लेकिन पूरे खेत का कंकडी फूट कड़वा निकल गया । इतना ही नहीं खेत में पानी का खर्च परिश्रम सब कुछ व्यर्थ गया । इसके अलावां आप खा भी नहीं सकते ।

घनश्याम महाराज विचार करने लगे कि मामा को कितना दुःख हुआ है । अब हमें कुछ करना होगा । प्रभु खेत में गये और वहाँ से तीन चार पका फूट ले आये । मामा कहे कि मामा ? इसे चखिये । मामाने चखा तो वह फूट शक्कर की तरह मीठा था । मामा को बड़ा आश्चर्य लगा । मामा तथा अन्य सभी घरके सदस्य खेत में गये । सभी वहाँ पर फूट को खाये सभी मीठे थे । मामा को हो रहा था कि मैं पूरे खेत के चारो कोने से कंकडी के फूट को चखा था सभी कडवे थे । सभी एकाएक मीठे कैसे हो गये । मामा की प्रसन्नता की अब कोई सीमा ही नहीं रही । यह घनश्याम के प्रताप से हुआ है । इसके बाद घनश्याम महाराज भी जब भी मामा के घर आते तो ककड़ी के पके फूट अवश्य खाते ।

मामा से घनश्याम महाराजने कहा कि, मामा ! आप को मन में मुझे ककड़ी के फूट खिलाने का संकल्प था इसलिये मीठा हो गया ? इस चरित्र का रहस्य यह है कि जिस तरह कंकडी कडवी होती है उसी तरह जिंदगी भी कभी कभी कड़वी लगने लगती है । इस तरह जिंदगी की कडवाहट दूर करनी हो तो जीव

को भगवान में समर्पित कर देना चाहिए। इससे भगवान आपके जीवन में कड़वी ककड़ी की तरह मीठापन भर देंगे । प्रभुमय जिंदगी जीने का आनंद प्राप्त होगा । आपकी सभी चिंताये भगवान दूर कर देंगे। भगवान का दृढ आश्रय शरणागति ही जीवन का समर्पण है।

प्रेमानंद स्वामी ने गाया है -

"पुरुषोत्तम सहजानंद जाने सुख राखी,
प्रेमानन्द आयो शरन चरन को निवासी,
हम तो एक सहजानंद चरण को उपाली..."

इस तरह जिंदगी एक निष्ठा, एक भरोसा से पुक्त रहे तो सदा के लिये जन्दगी में मीठामय वातावरण बना रहेगा।

●

अपना कर्म ही भक्ति है

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

प्रवास में यदि भक्ति मिल जाय तो प्रवास यात्रा बन जायेगी भोजन में यदि भक्ति मिले तो भोजन प्रसाद हो जायेगा। इसी तरह किसी धर्म में यदि भक्ति मिल जाय तो कर्म पूजा बन जायेगी। इस तरह करने से उत्तम फल की प्राप्ति होगी। जैसे बेर बेचने के व्यवसाय में तो कितने लोग लगे होंगे, जो वेर पेड़ से उतारते हैं वह कर्म है। इससे किसी का कल्याण नहीं होता, परंतु उसी बेर को शबरी उतारकर ले आई तो वह कार्य भक्ति बन गई। उसी भक्ति के प्रताप से श्रीराम उसकी झोपड़ी में पधारे और शबरी का कल्याण हो गया।

कर्म के पीछे क्या भाव छिपा हुआ है, वह महत्व का है यदि थोड़ा भी सूक्ष्मता से विचार किया जायेगा और विचार पूर्वक किया गया कर्म भक्ति के मार्ग तक पहुँचा सकता है।

ऐसी वात भगवान स्वामिनारायण की भक्ता बहन के जीवन में हुई । स्वामिनारायण भगवान अनेक जीवात्माओं का कल्याण करने के लिये इस धरती पर विचरण कर रहे थे। उस समय की यह वात है। भक्ता बहन अपने घर का सभी कार्य करते-करते स्वामिनारायण भगवान का स्मरण करती रहती थी। प्रत्येक श्वास में श्रीहरि का चिंतन हो रहा था। एक दिन प्रात: नित्य कर्म, पूजा पाठ से निवृत्त होकर रसोई बनाना प्रारंभ कीं। उनके पतिदेव खेत में चले गये थे, वह बहन भगवान का स्मरण करते हुये भोजन बनाने लगी। रोटी बना रही थी। उन रोटियों में एक रोटी अच्छी फूली, उसे देखकर बहन के मुख से निकला कि यह रोटी तो मेरे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण खाये ऐसी बनी है। जब भी अच्छी वस्तु बनती तब उस बहन के मनमें होता कि यह श्रीहरि के लिये है। उसके श्वास में श्रीहरि समाये हुये थे। प्रतिदिन की तरह रोटी-शाक तैयार करके आज भी खेत के मार्ग पर चल दी।

जिस रास्ते से वह बहन जा रही थी उसी तरफ से धूल उड़ती दिखाई दी। बाद में घोड़े पर सवार आता दिखाई दिया । उसके बाद धीरे-धीरे डुपट्टा लहराते हुए श्रीहरि का स्वरुप दिखाई दिया। अव बह पहचान गई कि हमारे प्रभु श्री स्वामिनारायण भगवान आ रहे हैं। बहन के आनंद की सीमा न रही -

"अमर ना सरदार हरि मारा नेणां तणां शणगार।
नेणां तणां शणगार, नटवर माणकीना असवार॥

माणकी पर सवार हुए श्रीहरि उस बहन के पास आकर खड़े हो गये । वह बहन मस्तक से दौरी नीचे उतारकर प्रभु को प्रणाम की बड़े आश्चर्य के साथ पूछी कि प्रभु इस समय इधर कहाँ ? महाराजने कहा कि दूसरी बात छोडो, मुझे भूख बहुत तेज लगी है। बहनने रोटी की थप्पी में से एक रोटी महाराज को दी महाराजने कहा यह नही, हमे तो हमारी रोटी चाहिये । बाद में महाराज ने

पेईज नं. १९

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "शुद्ध अन्त:करण से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

भक्ति करनी हो तो धर्म के साथ करनी, किसी भी संयोग में धर्म का त्याग नहीं करना। एक भाई था वह बस में सफर कर रहा था, उसके बगल में एक वैष्णव भाई बैठा था। लंबी सफर थी। रात के समय एक जगह पर बस खड़ी रही। वैष्णवभाई के बगल में बैठा हुआ भाई शराब पी रहा था। उसने वैष्णवभाई से कहा कि आप भी पीजिये। उसने कहा कि हम नहीं पीते हैं, अब सामने वालाभाई हठाग्रह करने लगा, तो वैष्णवभाई ने कहा कि आप ड्राईवर को पिलाई तो मैं पीऊँ। वह ड्राईवर के पास गया और कहने लगा कि आप शराब पीजिये। ड्राईवरने कहा कि मैं शराब इस लिये नही पी सकता कि सभी मुशाफिरों की जिन्दगी मेरे हाथ में, मै पीलुं तो वस खड्डे में गिर सकती है अकस्मात हो सकता है। इसलिये हम नहीं पी सकते। वैष्णवभाईने कहा कि जिस तरह मुसाफिरों का उत्तरदायित्व ड्राईवर के ऊपर है उसी तरह मेरे अन्दर बैठा हुआ जो परमात्मा है, वह हमें जीवन प्रदान किया है, यह शरीर रुपी घर दिया, वह हमें जीवन प्रदान किया है, यह शरीर रुपी घर दिया, उस घर का मालिक मैं हूँ। उस की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। यदि इस कर्तव्य का पालन मैं नही करुं तो अंतिम समय में क्या होगा। यह सोचना भी हमे ही है। इसलिये हम नहीं पी सकते। इसका मतलप यह कि धर्म पालन में अपना कोई नहीं होता। चाहे जैसी भी परिस्थिति हो महाराजके बनाये नियम का परित्याग कभी नहीं करना चाहिए। बहुत सारे धर्म की चर्चा की गई है - साधारण धर्म, विशेष धर्म इत्यादि बताये गये हैं। जिस तरह माता बालक को शिक्षा देती है ठीक उसी तरह महाराजने सभी धर्म नियम शिक्षापत्री में बता दिये है। हम सभी एक दूसरे पर खूब कसौटी करते हैं - वह कैसे माला करता है ? वह कैसी भजन करता है ? यह सब नहीं देखना याहिये। प्रात: से सायं तक सोचना चाहिए कि मेरे मन में क्या चल रहा है। कैसा विचार आ रहा है ? ऐसा विचार करने का क्या परिणाम आयेगा ? स्वयं के कर्तव्य को देखना चाहिए। आसक्ति रहित होकर अपने कर्तव्य को करना चाहिए। जहाँ अपेक्षा है वही उपेक्षा है। सभी का देखने जायेंगे तो निर्मल मन नहीं मिलेगा। ईर्ष्या-राग-द्वेष से पूरा समाज भरा हुआ है, सभी के साथ रहना है, इसलिये किसी की अपेक्षा के विना आप अपने कर्तव्य में दृढ रहिये। भगवान पर एक मात्र भरोसा रखना चाहिए। अन्त:करण शुद्ध होगा तो भगवान आयेंगे। कलियुग में मन-वचन की एकता कम दिखाई देती है।

एक बालक की माता स्वर्गस्थ हो जाती है। इस लिये उसका पिता दूसरी सादी करलेता है। बालक से पूछा जाता है कि तुम्हारी पहली माता अच्छी थी कि नई माता अच्छी है। बालक ने कहा कि दोनो माता अच्छी है। लेकिन पुरानी माता झूठ बोलती थी, नई माता सत्य बोलती हैं। पिताने पूछा कि वह क्या झूठ बोलती थी, उसने कहा कि जब मैं तूफान करता तब वह कहती कि हम तुम्हे खाना (भोजन:नहीं देंगे अथवा मारेंगे - सजा

देगें ऐसा कहकर डरवाती थी । इसके बाद भी वे भोजन देती और सजा भी नहीं देती थी । इसके अलांवा नई माता तो जो कहती है वही करती है । वे भोजन के लिये मना करती है तो नहीं देती इसलिये ये सत्य बोलती हैं । हमें यह विचार करना है कि हमें इतने दयालु भगवान मिले हैं उनकी आज्ञाओं का हम कितना उल्लंघन करते हैं । भगवान के बताये नियम का हम पालन नहीं करते । भगवान अन्तर्यामी हैं वे सब कुछ जानते । भगवान को शुद्ध अन्तःकरण से याद करते रहना चाहिये । श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि आप सभी में परमात्मा की इतनी भूख जागे कि विना दर्शन के रहा न जाय । जिस तरह इस सभा में बैठे हुये हों और मन कहीं अन्यत्र हो, इसी तरह मन को एक निष्ठ रखकर परमात्मा में लगाये रखना चाहिये । जैसे किसी को पानी प्यास लगी हो जब पानी मिल जाता है तब प्यास बुझ जाती है ठीक ऐसे ही परमात्मा में इतनी चाहना हो कि जब तक परमात्मा नहीं मिले तब तक चाहना खत्म नहीं होनी चाहिए । परमात्मा के सिवाय कुछ भी जगत में नहीं है ऐसा सदा भाव बना रहे, श्री नरनारायणदेव आप सभी में सत्संग की वृद्धि करें आप सभी का श्रेय हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

द्रोह

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

द्रोह शब्द नकारात्मक द्रष्टि बिन्दु है । द्रोह का मतलब पूर्वाग्रह, द्वेष, ईर्ष्या, वैर, जैसे कलियुग के दूषित स्वभाव वाले तत्व । इसके लिये तन, मन, धन तथा वर्तन, व्यवहार से अखंड प्रयत्न करते रहना । जो खराब विचार के लोग होते है वे ईर्ष्या-राग-द्वेष में अपना भाव रखते हैं । इसी में उन्हें शांति मिलती है । मन से वे सदैव वही विचार करते रहते हैं ।

धर्म शास्त्रो में परमात्मा की स्पष्ट आज्ञा है कि ''कभी भी अज्ञान से भी किसी का द्रोह नहीं करना चाहिये । कहीं भी किसी सन्दर्भ में मर्यादा की हानि होती हो तो चर्चा करके समाधान करना चाहिए । सत्संग के अभाव में ही अव्यवस्था पैदा होती है । विकृत वातावरण को अनुकूल बनाना ही सत्संग का प्रभाव है ।

शास्त्रों में ऐसा बताया गया है कि चार व्यक्तियों का कभी द्रोह नहीं करना चाहिए । (१) भगवान (२) भगवान के भक्त (३) गरीब (४) ब्राह्मण ।

(१) भगवान : कोई भी मनुष्य कभी भी भगवान का मन-वचन से द्रोह न करें । रावण, कशिपु, शिशुपाल दुर्योधन, दुःशासन, कंस, शकुनी, नारुपंत इन सभी को द्रोह करने का परिणाम भोगना पड़ा था ।

(२) भगवान के भक्त : भगवान को मानने वाले सभी भगवान के भक्त होते है । भगवान कहते हैं कि सम्भव है कि कोई मेरा अपराधकिया हो तो मै माफ कर देता हूं लेकिन भक्त का अपराधकरने वाले को कभी माफ नहीं करता । धर्म शास्त्र में मान को क्रोधके समान कहा गया है । दुर्वासा मुनि अम्बरीष राजा का द्रोह किये तो उसका परिणाम उन्हें भोगना पडा । परमात्मा कहते है कि मेरा हाथ भी मेरे भक्त की द्रोह करे तो मैं अपने हाथ को काट डालूं । भक्त का द्रोह करने वाले को प्रभु बड़ी भयंकर पीड़ा देते हैं । इसलिये मन-वचन-कर्म से भी भगवान के भक्त का द्रोह नहीं करना चाहिये ।

(३) गरीब : गरीब का मतलब निर्मानी भक्त । जो अपना सामना नहीं कर सके वह गरीब है । क्योंकि पति के सामने पत्नी गरीब, शेठ के सामने नौकर गरीब, धनवान के सामने निर्धन गरीब । इन सभी का कभी द्रोह नहीं करना चाहिए । परमात्मा के द्रोह के बराबर है । इन का द्रोह करने से सुख-शांति नहीं मिलती । पति को पत्नी का अपमान नहीं करना चाहिए । इसी तरह गरीब का अपमान नहीं करना चाहिए ।

(४) ब्राह्मण : सभी शास्त्रों में ब्राह्मण को गुरु स्थान में रखा गया है। जो गुरु स्थान में होता है वह परमात्मा के समान होता है । इस लिये अज्ञान में भी ब्राह्मण का अपमान नहीं करना चाहिए । परमात्मा को दी गई वस्तु ब्राह्मण को मिलता है। इस लिये भावपूर्वक जो भी वस्तु दान-दक्षिणा के रुप में देनी हो उन्हे दिया जा सकता है। इस लिये ब्राह्मण का भी द्रोह नहीं करना चाहिए।

श्रीजी महाराजने वचनामृत में भगवान के भक्त का द्रोह नहीं करने की आज्ञा की है । जिस तरह शरीर में एकमात्र डायाबीटीज रोग हो जाय तो अन्य सभी रोगो को आमंत्रण देता रहता है। इसी तरह सत्संग में आने के बाद जिन्हे द्रोह करने का रोग हो गया है उनका पतन होना निश्चित है । बड़े आदमी का अवगुण लेने से जीव का सर्वनाश होता है। द्रोह करने से सत्संग रुपी भव्य इमारत ढह जाती है। इसलिये द्रोह कभी नहीं करना चाहिए।

द्रोह करने के कारण ही निर्विकल्पानंद स्वामी महाराज के साथ सखी जैसे रहते थे फिर भी सत्संग में से उनका पतन हो गया। बड़े संत में जब दोष दिखाई देता है तब उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है। संत ब्रह्मअग्नि की तरह है। द्रोह भयंकर जहर है। जहरी वायु का स्प्रे है। गटर का पानी तथा विष्ठा का भोजन कहाँ से सुख देता। इसी तरह द्रोह करने से किसी को कहाँ मोक्षमार्ग मिला है। बल्की मार्ग रोकने का साधन है । भगवान भक्त, ब्राह्मण, गरीजब का द्रोह करने से अन्तःकरण मटमैला हो जाता है। भक्त का अभाव आना ही मरण है। उसी जीवन का नाश समझो।

अनु. पेईज नं. १६ से आगे

जिस फूली हुई रोटी में बहन को श्रीहरि के लिये भोजन कराने का संकल्प हुआ था, उसे बड़ी श्रद्धा के साथ खाये। वह खुश हो गई और महाराज को धन्यता प्रदान करने लगी। महाराज ! और शाक-रोटी लीजिये ऐसा कहकर जब वह मस्तक नीचे करी तब तक महाराज तो प्रसादी की आधी रोटी खाकर अवश्य हो गये।

मित्रो ! यहि हृदय में सच्चा भाव हो, सच्चा प्रेम हो तो भगवान आज भी प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। हम ऐसा कह करके भोजन बनाते है कि मैं अपने इष्टदेव के लिये भोजन बना रही हूँ। ऐसी भावना रखकर श्रद्धापूर्वक पवित्रता से भोजन बनाया जाय तो उसे भगवान अवश्य स्वीकार करेंगे । भगवान भावना के भूखे हैं। भगवान को दिखावा नहीं चाहिये । यदि भक्त के हृदय में सच्चा प्रेम हो तो भगवान को भूख लगती है, और भगवान उस प्रसाद को ग्रहण भी करते हैं।

''जब से जागे तब से सबेरा'' घर में भोजन बनाते हुए भगवान का स्मरण करेंगे ऐसा नियम रखेंगे तो वह भोजन प्रसाद होजाएगा। भोजन कराने वाले का श्रेय होगा।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीहरि जयंती रामनवमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का आज्ञा से इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारयण भगवान का प्रागट्योत्सव चैत्र शुक्ल-९ ता. १५-४-२०१६ को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धूमधाम से मनाया गया था।

प्रात: ६-३० से ७-०० बजे तक अक्षरभुवन में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव अभिषेक पुजारी संतो द्वारा षोडशोपचार से किया गया था। इसके बाद अन्नकूट दर्शन करके भक्तलोग धन्यता का अनुभव कर रहे थे । पुजारी स्वामी परमेश्वरदासजी की प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान प.भ. मनहरभाई पाटडिया परिवार थे । दोपहर १२-०० बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र भगवान के प्रागट्योत्सव को भी धूमधाम से मनाया गया था।

रात्रि में मंदिर के प्रसादी भूत प्रांगण में संत हरिभक्तो द्वारा कीर्तन-भजन का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर सभा में विराजमान हुए थे । रात्रि में १०-१० बजे सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज के प्रागट्योत्सव की आरती उतारे थे । हजारो दर्शनार्थी दर्शन का लाभ लेकर प्रसाद ग्रहण करके प्रस्थान किये थे। समग्र कार्यक्रम पू. महत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, हरिचरण स्वामी, को. जे.के. स्वामी, नटु स्वामी, तथा संत पार्षद मंडल एवं हरिभक्तों के सहयोग से कार्य सम्पन्न हुआ था। (को. शा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में मारुति यज्ञ हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मारुति यज्ञ हनुमानजी महाराज के तथा श्री गणपतिजी महाराज के पुजारी पार्षद श्री महादेव भगत तथा श्री बाबु भगत की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र शुक्ल-१५ ता. २२-४-१६ को श्री हनुमान जयंती के अवसर पर मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। जिस में बहुत सारे भक्त पूजा में बैठने का लाभ लिये थे। श्री हनुमानजी महाराज को अन्नकूट का भोग लगाया गया था ? सायंकाल ५-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मारुति यज्ञ की पूर्णाहुति की गई थी। हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे। (पा. बाबू भगत)

प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के ६ठ्ठे वंशज तथा श्री नरनारायणदेव गादी के ६ठ्ठे निवृत्त आचार्य प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव चैत्र कृष्ण-३ ता. २५-४-२०१६ को प्रात: काल सभा में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में धुन कीर्तन के साथ मनाया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्री प्रात: ८-५ बजे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर दर्शन करके संतो के प्रेम में वशीभूत होकर बैठक में विराजमान हुए थे। जहाँ पर संत हरिभक्त पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। इसी तरह श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भी अनेक संत-हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। अमदावाद, मूली, कच्छ (भुज) इत्यादि स्थानो पर इस प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई थी। (को. शा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया मारुति यज्ञ - श्री हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी गुरुप्रसाददाजी एवं शा.स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर मारुति यज्ञ संपन्न हुआ था। पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर एप्रोच मंदिर से संत पधारकर धर्मकुल की महिमा समझाये थे । प.पू. लालजी महाराजश्री कष्ट भंजन देव की आरती उतरकर अपने स्थान पर पधारे थे। रात्रि में ९ से १२ तक हनुमान चालीसा का पाठ

किया गया था। सभी को सुखडी का प्रसाद दिया गया था।

(नरोत्तम भगत)

न्यु राणीप में संत कीर्तन संध्या

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप में ता. १६-४-१६ शनिवार को रात्रि में ८-३० से ११ बजे तक सत्संग सभा एवं कीर्तन संध्या का आयोजन किया गया था। जिस में युवान संत स्वा. हरिजीवनदासजी, स्वा. बलदेवप्रसाददासजी, स्वा. सिद्धेश्वरदास, ब्र.स्वा. मुकुन्दानंदजी, स्वा. बालस्वरुपानंदजी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी, शा. माधवप्रियदासजी तथा शा. कुंजविहारीदासजीने नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन-धुन किया था। समग्र सभा का मार्दर्शन स्वा. देवप्रकाशदासजीने किया था। सभा संचालन महंत शा.पू. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर)ने किया था। सभी प्रसाद ग्रहण किये थे।(श्री न.ना.देव युवक मंडल न्यु राणीप - प्रतीक पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में मारुति यज्ञ एवं हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा स्थापित श्री कष्ट भंजनदेव के प्रागट्योत्सव को श्री हनुमान जयंती (ता. २२-४-१६ के अवसर पर मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। प्रातः ८-०० बजे संतो द्वारा यज्ञ का प्रारंभ हुआ।

प्रातः से सायंकाल ५-०० बजे तक श्री हनुमानजी महाराज को प्रसन्न करने के लिये आहुती दी गई। संत तथा यजमान परिवार द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति की गई थी। स.गु. महंत स्वामी देवप्रकासदासजीकी प्रेरणा से बालस्वरुपदास स्वामीने तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने कार्य व्यवस्था सम्हाली थी। सभी भक्तों के लिये भोजन की व्यवस्था की गई थी। जिस में यजमान प.भ. पोपटभाई पटेल तथा फूलहार के यजमान पवन महाराज तथा यज्ञ के मुख्य यजमान अ.नि. भक्तिभाई आत्माराम पटेल कृते नरेन्द्रभाई पटेल थे। (शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा (बहनो का) द्विदशाब्दी एवं महिला पारायण

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा (बहनोका) को ३० वर्ष पूर्ण होते ही त्रिशताब्दी पाटोत्सव ता. १-४-१६ से ता. ३-४-१६ तक धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर श्री घनश्याम चरित्र की कथा हवेली की सांख्ययोगी बहनोने किया था।

इस अवसर पर प.पू. गादीवालाजी के वरद् हाथों ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गई थी। इस अवसर पर जेतलपुर, वावोल, धमासणा, अंबासणा, उनावा, सुरेन्द्रनगर से सां.यो. बहने उपस्थित थी। पारायण में पोथीयात्रा की यजमान चौधरी सोनी बहन लाभ ली थी।

अगल बगल के गाँवो से महिला मंडल की बहनोने भाग लिया था। सभी बहनोने धर्मकुल का दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त की थी। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव महिलमा मंडल श्री नरनारयणदेव युवक मंडल बालवा की सेवा प्रेरणारुप थी।

(को. श्री न.ना.देव महिलमां डल बालवा)

बालवा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा का ८९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया था। श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून से सारा वातावरण दिव्य हो गया था। बाद में प.पू. बड़े महाराजश्रीके आगमन के बाद ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूटकी आरती हुई थी। प्रासंगिक सभा में जेतलपुर मंदिर महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा भक्ति स्वामीने भगवान सम्बन्धी वात की थी। प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद मे कहा कि जब भवान की महिमा बढती है तब अपने आप जगत की महिमा घट जाती है। सत्संग में आने के बाद ही सत्य-झूढ का ख्याल आता है। मै का भाव भी घटने लगता है। इस प्रसंग पर अनेक धामों से संत पधारे थे, जेतलपुर, महेसाणा, जयपुर, अहमदाबाद इत्यादि स्थानो से संत पधारे थे।

पाटोत्सव के यजमान अ.नि. चौधरी नाथाभाई माधाभाई परिवार कृते वेलजीभाई, गांडाभाई तथा गोविंदभाई थ।

शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी ने आगामी संवत २०१८ की साल में बालवा में श्रीहरि के चरणारिवंद पडे जिसे २०० वर्ष पूर्ण होने से श्रीहरि बालवा आगमन ''द्विशताब्दी महोत्सव'' धूमधाम से मनाने की प्रेरणा की थी।

(प्रमुकश्री न.ना.देव युवक मंडल - बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर २९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर का २९ वाँ पाटोत्सव ता. १२-४-१६ चैत्र शुक्ल-६ को धूमधाम से मनाया गया था।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में १२ घंन्टे की धुन तथा ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। अन्नकूट के यजमान अ.नि. चौधरी सोनीबा भीखाजी परिवार थे।

इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी, गांधीनगर (से-२) के महंत स्वामी, आनंद स्वामी इत्यादि संत पधारकर अमृत वाणी का लाभ दिये थे।

चैत्र शुक्ल-१५ ता. २२-४-१६ को श्री हनुमान जयंती के अवसर पर श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। अन्नकूट के यजमान ''सहजानंद ग्रुप'' थे। (संचालन : चौधरी डाह्याभाई शंभुभाई माणेकपुर)

लुणावाला युवा शिबिर एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल रजत जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में ता. २७-३-१६ रविवार को झाडी देश के युवानो के सत्संग पोषण हेतु युवा शिबिर का आयोजन किया गया था।

लुणावाला श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने प.पू. लालजी महाराजश्री के समक्ष सुंदर स्वागतगीत गाकर शिबिरका प्रारंभ किया था। इस प्रसंग पर पधारे हुए संतोने श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की महिमा समझाई थी।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया कि हम सभी श्री नरनारायणदेव के ऋणी है। श्री नरनारायण युवक मंडल के सभी कार्य कर्ता एक दूसरे के सहयोग से सत्संग प्रवृत्ति करते रहे इससे जन जागृति होगी, आप सभी की उन्नति हो ऐसा श्री नरनारायणेव के चरणों में प्रार्थना। आरती के बाद सभी बालक प.पू. लालजी महाराजश्री का चरण स्पर्श करके धन्यता का अनुभव किये।

(श्री न.ना.युवक मंडल लुणावाला - हर्निश)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर शतामृत पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बालासिनोर में श्रीहरि के समकालीन स.गु. महानुभावानंद स्वामी द्वारा निर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर का ता. ६-३-१६ को १७५ वर्ष पुरा होने से शतामृत पाटोत्सव का आयोजन किया गया था। जेतलपुरधाम के स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशधासजी के मार्गदर्शन में समग्र आयोजन दिव्य बना था।

प्रसंग के उपलक्ष्य में स.गु. महानुभावानंद स्वामी रचित महान शास्त्र श्रीहरि कृष्णलीलामृत ग्रन्थ का पंचदिनात्मक पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीके वक्तापद पर संपन्न हुआ था।

इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनो को दर्शन देने हेतु पधारी थी। कथा के अन्तर्गत सभी उत्सव मनाये गये थे।

ता. ६-३-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक महापूजा, आरती, अन्नकूट तथा यज्ञ एवं कथा की पूर्णाहुति की गई थी।

यजमान परिवार का सन्मान किया गया था। अनेक मंदिरों से संत पधारे थे। सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी। सभा में काछिया समाज के आर्ट कलाकार पधारे थे। प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी, गुरुप्रसाद स्वामी, स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. नारायणप्रसाददासजी, अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग में जेतलपुर, अंजली, छपैया, मकनसर, महेसाणा, जयपुर से संत पधारे थे। श्री नरनारायण युवक मंडल के सेवा प्रेरणारुप थी। (को. श्री बालासिनोर)

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९० वा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कलोल के अ.नि.प.भ. पोपटभाई लालजीभाई ठक्कर परिवार कृते कनुभाई, नरेन्द्रभाई, महेन्द्रभाई इत्यादि परिवार के यजमान पद पर महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९० वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ.

पाटोत्सव के उलक्ष्य में पंचदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा स्वा. भक्तिनंदनदासजीके वक्तापद पर संपन्न हुई थी। विविधप्रसंगो में ठाकुरजी का उत्सव मनाया गया था। अनेक स्थानो से संत पधारे थे।

समग्र प्रसंग में महंतश्री के.पी. स्वामी, महंतश्री देवस्वरुपदासजी, महंतश्री वी.पी. स्वामी, महंतश्री नारायण स्वामी इत्यादि संतो की सेवा सराहनीय थी। भक्त लोग दर्शन तथा प्रसाद का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

(भक्तिनंद स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में श्रीमद् भागवत सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के पू. महंत स्वामीकी प्रेरणा से एवं अंजली मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन से ता. १८-४-१६ से ता. २४-४-१६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी शा.पी.पी. स्वामी, शा. नारायणप्रसादासजी (सायला), शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा), ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर से-२३) इत्यादि संत तथा अनेक धामोंसे सां.यो. बहने पधारकर आशीर्वाद प्रदान किये थे।

अन्त में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी पधारकर सभी बहनों को दर्शन का सुख प्रदान की थी। कथा के अन्तर्गत श्रीकृष्णजन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह इत्यादि प्रसंग धूमधाम से मनाया गया था।

कथा के यजमान पद का लाभ प.भ. अमृतभाई, सवजीभाई ठक्कर परिवारने लिया था।

समग्र कथा में सभा संचालन शा.स्वा. हरिप्रकाशधासजीने किया था । महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर आयोजन किया था। युवक मंडल तता महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(को. अनिलभाई, अंजली)

धाकड़ी (ता. विरमगाम) गाँव श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं जेतलपुर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशधासजी एवं पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से विरमगाँव तालुका के धाकड़ी गाँव में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचदिनात्मक कथा शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजीने ता. ७-४-१६ से १२-४-१६ तक की थी।

ता. ७-४-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा का प्रारंभ किया गया था । यजमान परिवार के प.भ. पटेल मनहरभाई खुशालभाई इत्यादि परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारी थी। अनेक धाम से संत पधारे थे। इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर बहनो को आशीर्वाद प्रदान की थी। जेदलपुर, कालीयाणा, पाटडी से सां.यो. बहने पधारी थी। जेतलपुर, छपैया, महेसाणा, जयपुर, कालुपुर, कांकरिया, वडनगर इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे। धाकड़ी गाँव के युवानों की सेवा सराहनीय थी।

(तेजेन्द्र भट्ट - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा (बहनोका) दशाब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से काशीन्द्रा (बहनों का) श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमद् भागवन दशम स्कन्धकी त्रिदिनात्मक कथा जेतलपुर के शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजीने की थी। महोत्सव के यजमान प.भ. अ.नि. मनुभाई नागरदास पटेल परिवार थे । प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वदद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती की गई थी।

बाद में सभा में संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर, छपैया, कांकरिया, मूली, मकनसर, अंजली मंदिर से संत पधारे थे। (जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सापावाडा मंदिर के महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा के देव का २३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १४-३-१६ को गाँव के अ.नि. दवजीभाई करशनभाई पटेल तथा अ.नि. नरेशभाई दवजीभाई पटेल के यजमान पद पर संपन्न हुआ था। यहाँ के मंदिर के स्तंभ का पूजन करके प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारकर सभी को दर्शन का सुख प्रदान किया था। अनेक धामो से संत पधारे थे। सभा संचालन हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीने किया था। (कोठारीश्री)

कांकरिया (रामबाग) मंदिर में सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से एवं कांकरिया के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. ११-४-१६ से ता. १७-४-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण अ.सौ. पद्माबहन भोगीलाल भावसार के यजमान पद पर यहाँ के मारुति होल में सां.यो. नदर्मदाबा के वक्तापद पर संपन्न हुई । इस प्रसंग पर श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीरामप्रतापजी का विवाह प्रसंग, गादी अभिषेक, समूह आरती रासोत्सव, इत्यादि प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे । यहाँ के महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

(सोनाबहन, रुपाबहन, रामबाग महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबाका २१ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं शा.स्वा. माधव की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा का २१ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर प्रातः में षोडशोपचार महापूजा के बाद जेतलपुर से पधारे हुए शा.पू. पी.पी. स्वामी के हाथों ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती हुई थी । इस अवसर पर जेतलपुर, कांकरिया, अंजली, महेसाणा, जयपुर, नारायणपुरा, खारोल, लुणावाला, छपैया से संत पधारे हुए थे । पाटोत्सव के यजमान दिलीपभाई दलसुखभाई परिवार था ।

महा प्रसाद के यजमान पटेल अनिलभाई रमणभाई थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी । (किशन का. कोठंबा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) में मारुतीयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) में चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमानजीके प्रसंग पर मारुती यज्ञ का आयोजन किया गया था । जिस के यजमान प.भ. जनकभाई विनुभाई पटेल परिवार था । पूर्णाहुति के प्रसंग पर मूली मंदिर के ट्रस्टी स.गु. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी, जेतलपुर, नारायणपुरा, जयपुर, महेसाणा, कांकरिया, मनकसर से संत पधारे थे । महंत वी.पी. स्वामीने सुन्दर व्यवस्था की थी । (कोठारीश्री अंजली मंदिर)

कणभा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कणभा में ता. १०-४-१६ को सुंदर सभा का आयौजन किया गया था । इस अवसर पर भक्तों के आग्रह पर १५ वर्ष गादी पर आरुढ होने के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारे थे । सत्संग सभा में अनेक धामों से संत पधारे थे - जिस में जेतलपुर, कांकरिया, कालुपुर, नारायणपुरा, मकनसर, सिद्धपुर, हिंमतनगर, पेथापुर, बालवा, बोपल, बणझर से संत पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

अगल बगल के गाँवो से आकर भक्तोंने सभा का लाभ लिया था । (कोठारीश्री कणभा)

लालोडा धाममें (ता. ईडर) युवा शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में यहाँ के मंदिर में स.गु. तपोवृद्ध संत शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी के संकल्प से तथा स्वा. विश्वप्रकाशदासजी एवं पुजारी बालकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में तथा हरिभक्तों के सहयोग से युवा शिबिर का ता. २४-४-१६ रविवार को आयोजन किया गया था । जिस में १४०० जितने युवान भाग लिये थे। ता. २४-४-१६ को प्रातः ९-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारे थे । बाद में शिबिर का दीपप्रागट्य करके उद्घाटन किये थे ।

इस प्रसंग पर धामों से संत पधारे थे जिस में के.पी. स्वामी (जेतलपुर) गुरुप्रसाद स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामी, माधवप्रसाद स्वामी, बलदेव स्वामी, हरिजीवन स्वामी, चन्द्रप्रकाश स्वामी ईत्यादि संत उपस्थित थे । इस अवसर पर सभी संतोने सत्संग की प्रवृत्ति पर सभी को बल दिया था । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी युवानो को श्री नरनारायणदेव की निष्ठा, नियम, निश्चय तथा पक्ष की वात की थी । १४०० युवानोने ऐतिहासिक कार्य किया था - जिन्होंने धर्मकुल के प्रति दृढ निष्ठा को दिखाया था। सायंकाल विशाल सत्संग रैली का आयोजन किया गया था ।

समस्त प्रसंग में शा. महंत प्रेमप्रकाशदासजी स्वा. सुखनंदनदासजी तथा गोपाल स्वामीने सुंदर सेवा का कार्य किया था । (भूमित पटेल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

नरनारायणनगर गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मालणीयाद गाँव के मंदिर का १०० वर्ष पूरा होने से तथा नूतन मंदिर का २० वर्ष पूरा होने से यहाँ का सत्संग पोषण करने वाले स्वा. राधामोहनदासजी के स्मरणार्थ शताब्दी तथा द्विदशाब्दी महोत्सव ता. ४-४-१६ से ता. ८-४-१६ तक धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण, त्रिदिनात्मक हरियाग, सांस्कृतिक प्रोग्राम तथा कथा में आने वाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये।

ता. ८-४-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से मालणीयाद, कृष्णनगर, नरनारायणनगर इत्यादि तीनो मंदिरो में ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती तथा कथा की पूर्णआहुती की गई थी। अनेक धामों से संत पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने किया था।

तीनो गाँव में सभी को भोजन कराया गया था। समग्र कार्यक्रम में मार्गदर्शन करने वाले स्वा. कृष्णवल्लभदासजी थे। श्री नरनारायणेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी।

अन्य सेवा में को. ब्रह्म स्वामी, प्रेमवल्लभ स्वामी, घनश्याम स्वामी, श्रीजी स्वामी, सेवा वत्सल स्वामी जुडे थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

धांगधां गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धांगधा में प.भ. लच्छुभाई सींधी के निवास स्थान पर ता. २५-४-१६ का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन किया गया था। जिस में दलवाडी जंयती भाई, पुजारा नटुभाई, भगवानजीभाई दलवाडी, अनिलबाई दूधरेजिया उपस्थित थे। (अनिलभाई दुधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नरनारायण स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारा?ण मंदिर विहोकन में चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिन तथा श्रीराम जनमोत्सव की आरती, रात्रि में रास गरबा तथा रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि के प्रागट्योत्सव की आरती की गई थी। १६ अप्रैल शनिवार सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक सत्संग सभा में भगवान के प्रसादी के खडांऊ का पूजन अर्चन किया गया था। स्वामीश्रीने श्रीजी महाराज के बाललीलाओं की कथा की थी। यहाँ के मंदिर का २९ वाँ पाटोत्सव १९ मई से २२ मई तक चला था।

(बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अेटलान्टा (आई.एस.एस.ओ.) (जी.ए.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २६-३-१६ शनिवार को श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलत्सव सभी मिलकर धूमधाम से मनाये थे। संतोने ठाकुरजी को सुंदर ढंग से अलंकृत करके दर्शन करवाया था। श्री तेजेशभाई के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युक मंडल ने ठाकुरजी को फूलहार से सुसज्जित किया था। श्रीहरि को झूले पर झुलाया गया था।

प्रेसि. श्री दक्षेश पटेलने आभार विधिकरके आगामी १२ से १६ जुलाई तक एटलान्टा मंदिर के पंचम पाटोत्सव की घोषणा की थी। जिस के निमित्त फरवरी २०१६ से प्रति शनिवार को सभा के बाद धून की जाती है। समस्त हरिभक्तों को पाटोत्सव का लाभ लेने की सूचना दी गई थी। पाटोत्सव में समग्र धर्मकुल पधारेगा इस में पूजन का लाभ लेने के लिये विसेष सूचना दी गई थी। धर्मकुल का पूजन स्वयं श्रीहरि का पूजन है इस लिये सभी लोग इसका अवश्य लाभ लें।

(ट्रस्टी मंडल एटलान्टा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शिकागो मंदिर के संतो की प्रेरणा से मंदिर में फूलदोलोत्सव रामनवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती, समूह मपाजपूजा, इत्यादि उत्सव करके भक्तों ने लाभ लिया। पुजारी शांति स्वामी के मार्गदर्शन में मंहत शा. यज्ञप्रकाशदासजीने महापूजा करवाया। जिस में बहुत सारे भक्तोंने भाग लिया। जिस में यजमान श्री प्रवीणभाई कांतिभाई पटेल परिवार सह यजमान श्री संजयभाई सोनी पिरवार तथा पूलहार की सेवा में श्री विष्णुभाई पटेल थे।

चैत्र शुक्ल-९ से चैत्र शुक्ल-१५ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित स्नेह गीता का पारायम शा. यज्ञप्रकाशदासजी ने किया।

यहाँ के मंदिर की आफिस में सेवा करने वाले अ.नि. रमणदादा की पुण्य स्मृति में कथा का पारायण उनके परिवारजनोने करवाया था। कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ जेतलपुर धाम से पू. शा.पी.पी. स्वामी तथा भागवताचार्य श्री योगेन्द्रभाई भट्ट पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा शा.पी.पी. स्वामी अ.नि. रमणदादा की सेवा-निष्ठा तथा पक्ष की प्रशंसा किये ते। प्रेसि. प.भ. जगदीशभाई ने आभार विधिकी थी।

(वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से रविवार की साम को महंत स्वामी की उपस्थिति में यजमान परिवार के साथ हरिभक्तोने धूलेटी का उत्सव धूमधाम से मनाया था। श्रीहरि के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर अमदावाद से प.पू.असौ. बड़ी गादीवालाजी बहनो को दर्शन देने के लिये पधारी थी। सभा में सभी भक्तों के साथ मिलकर धुन-भजन-कीर्तन किया गया था। महंत स्वामीने श्रीहरि लीला चरित्र का वर्णन किया था। आगामी प्रथम पाटोत्सव की घोषणा की गई। यमजानश्री बापुभाई पटेल तथा सह यजमान का सन्मान किया गया था। बहनो की सभा में प.पू. गादीवालाजीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ.) श्री नरनारायणदेव जयंती उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शनिवार को विकेन्ड में पधारी हुई प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तथा पू. बिन्दुराजा के शुभ सानिध्य में न्युयोर्क, न्युजर्सी, चेरीहील, एलटाउन, पारसीपनी, विहोकन, फीलाडेल्फीया, एठलान्टा, पेन्सीलवेनीवा से पधारे हुये भक्तों की उपस्थिति में श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव जन्म जयंती का उत्सव कीर्तन गाकर मनाया गया था।

पार्षद मूलजी भगतने श्री नरनारायणदेव की सुंदर कथा सुनाई। बहनो के विभाग में प.पू. बड़ी गादीवालाजी भेंट, पुष्प, प्रसाद अर्पण करके आशीर्वाद दी थी। सेवा करने वाले यजमानों का सन्मान किया गया था। प.पू.अ.सौ. गादीवालजी तथा पू. बिन्दुराजाने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। अन्त में ठाकुरजी की आरती के बाद प्रसाद लेकर सभी विसर्जित हुये थे। (प्रवीणभाई शाह)

वडतालधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से शनिवार को विकेन्ड में श्री नरनारायणदेव जयंती का उत्सव सभी मिलकर मनाये थे। सभा में महंत स्वामीने फूलदोलोत्सल का महत्व समझाया था। ३०० जितने भक्त उत्सव में भाग लिये थे।

अन्य सेवा करने वाले भीखाभाई, हिरलकुमार, रमेशभाई, मुकेशभाई, बलदेवभाई डांगरवा, विपुलकुमार मूलचंदबाई, गीरीशकुमार, सेवंतीभाई इत्यादि हरिभक्तों की सेवा की महंत स्वामीने प्रशंसा की थी। ३५ बालकों द्वारा मंदिर में सुंदर शिबिर करके भक्तों को संप्रदाय का विशेषज्ञान प्रदान किया गया था। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से होलीका उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। यजमान तथा सह यजमानने पूजन का लाभ लिया था। श्री नरनारायणदेव जयंती का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर भगवान को झूले पर सजाकर झुलाया गया था। संतोने सभा में श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य समझाया था। अंत में ठाकुरजी का नित्य-नियम आरती करके सभी प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडरका आगामी वार्षिक पाटोत्सव ज्येश्ठ शुक्ल-१३ ता. १८-६-२०१६ शनिवार

सापावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का नया मो. : ९४०९१३७०८५

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

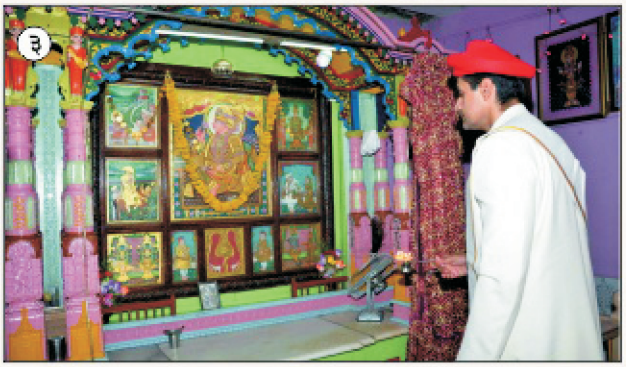

(१) रामनवमी को कालुपुर मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में श्री घनश्याम प्रागट्योत्सव सम्पन्न ।(२) कालुपुर मंदिर में हनुमान जयंती के अवसरपर श्री हनुमानजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन ।(३) कणभा मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) भावनगरपुरा में पारायण प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे ।(५) अंजली (वासणा) मंदिर मे मारुति यज्ञ । (६) अपने एटलान्टा मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती का फूलदोलोत्सव का दर्शन ।(७) अपने सीनेमीन्शन (न्युजर्सी) मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर पर मारुति यज्ञ में लाभ लेते हुए हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) मेलबोर्न (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) एडीलेड मंदिर में सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।(३) पर्थ मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारते हुए पू. महाराजश्री साथ में पी.पी. स्वामी (छोटे) तथा हरिभक्त ।(४) सीडनी मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(५) शिकागो मंदिर में समूह महापूजा तथा सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करते हुए हरिभक्त ।(६) डिट्रोईट मंदिर में रामनमवी का पूजन ।(७) रीयमन्ड (यु.एस.) में प.पू. महाराजश्री सत्संग प्रचार के समय बालको के साथ प्रसन्न मुद्रा में ।(८) आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर जेक्सन विले. मीसीसीपी में पू. महाराजश्री के सानिध्य में सत्संग सभा ।

Praful Kharsani